ISSN: 2456–5474 RNI No.UPBIL/2016/68367 Vol-4* Issue-2* March- 2019
Innovation The Research Concept

अन्तर्राष्ट्रीय महिलावाद वैश्वीकरण के आईने में

के0 एच0 वासनिक
एसोसिएट प्रोफेसर,
राजनीति शास्त्र विभाग
गर्वनमेंट विदर्भ इंसटीट्यूट ऑफ साइंस एण्ड ह्यूमेनिटीज
अमरावती

सारांश

अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर महिला शक्तिवाद अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा हैं। किन्तु उसका एक राष्ट्रीय अथवा अन्तर्राष्ट्रीय संगठन सक्रिय नहीं दिखाई दे रहा हैं। साथीसाथ उसके लक्ष्य एवं प्राथमिकताएँ बिखरी हुई हैं। किन्तु एक सशक्त आदोंलन के रुप में उसकी □सम्भावनाएँ बहुत अधिक महत्वपूर्ण हैं। अभी वह एक सिद्धांत और सगंठन का ढाचाँ तैयार करने में लगा हुआ हैं। एक विकासमान विचारवाद के रुप में उसका अध्ययन किया जा सकता हैं। महिलाओं के जीवन और विश्वपूंजीवादी व्यवस्था के केन्द्र और परिधि में पुरुषो के वर्चस्व को चुनौती देने की सम्भावनाओं पर पूंजीवादी भूमंडलीकरण का गहरा, लेकीन परस्पर विरोधी प्रभाव पड़ा हैं। एक तरफ पुरुषों के प्रभुत्व के पुराने स्वरुप कमजोर हो रहे हैं, दूसरी तरफ महिलाओं की जीवन स्थितियाँ बदतर होती जा रही हैं।

पूर्ण राजनीतिक नागरिकता शिक्षा तथा व्यावसायिक अवसरों की समान उपलब्धता और महिलाओं के शरीर यौनेच्छा तथा प्रजनन क्षमता पर पुरुषों के सांस्कृतिक तथा वैधानिक अधिकार की समाप्ति मुख्य नारीवादी अ□भाषाएँ हैं, जो पुरीतरह नवस्वारवाद के अनुकूल हैं।

कामकाजी वर्ग और ग्रामीण तथा शहरी गरीब महिलाओं की अनिवार्यता एवं हितों को दर्शाने के लिए जो नारीवादी आदोलंन शुरु करना चाहते हैं, उन्हें गंभीर तथा जटिल राजनीतिक द्वदों का सामना करना पडता हैं।

सन 1993 में मानवाधिकार संबंधी संयुक्त राष्ट्रसंगठन विश्व सम्मेंलन में मानवाधिकार ही महिलाओं का अधिकार हैं तथा महिलाओं का अधिकार ही मानवाधिकार हैं।

मेंरा मानना हैं कि, जब तक अमेंरिका, चीन जैसे प्रगतराज्य की राजनीतिक व्यवस्थाएँ महिलाओं के हाथ में नहीं आती तब तक अन्तर्राष्ट्रीय महिला संगठन विश्वस्तर पर मजबूत नहीं होगा।

मुख्यशब्द –महिलाशक्तिवाद,अन्तर्राष्ट्रीय सगंठन, आंदोलन, विश्व पूँजीवादी व्यवस्था,□भूमंडलीकरण, शास्त्रीय पितृसत्ता, भागीदारी, अन्तर्राष्ट्रीय मुद्राकोष, बाजारनीति, पालन पोषण, नव उपनिवेशवाद, महिलाएँ, संयुक्त राष्ट्र, सगंठन, परिधि, राजनीति विमर्श, सम्मेंलंन भूमंडलीय न्याय, रणनीतिक खामोशी.

प्रस्तावना

सारे विश्व में महिला शक्तिवाद अपनी उपस्थिति दर्ज करा रहा हैं, किन्तु उसका एक राष्ट्रीय अथवा अन्तर्राष्ट्रीय सगठनं नहीं हैं। उसके लक्ष्य एवं प्राथमिकताएँ □ बिखरी हुई हैं। किन्तु एक सशक्त आन्दोलन के रुप में उसका □वी सम□वनाएँ बहुत अधिक महत्वपूर्ण हैं। अभी वह एक सिद्धांत और संगठन का ढॉचा तैयार करने में लगा हुआ हैं। एक विकासमान विचारवाद के रुप में उसका अध्ययन किया जा सकता हैं।

महिलाओं के जीवन और विश्व पूंजीवादी व्यवस्था के केन्द्र और परिधि में पुरुषो के वर्चस्व को चुनौती देने की संभावनाओं पर पूंजीवादी भूमंडलीकरण का गहरा, लेकिन परस्पर विरोधी प्रभाव पडा हैं। एक तरफ पुरुषों के प्रभुत्व के पुराने स्वरुप कमजोर हो रहे हैं, दूसरी तरफ महिलाओं की जीवन स्थितियाँ बदतर होती जारही हैं।

'शास्त्रीय पितृसत्ता' का समर्थन करनेवाली व्यवस्थित अर्थव्यवस्थाएँ ग्रामीण परिधि में पूँजीवादी प्रभाव से अस्थिर हो गयी। पितृसत्ता ऐसी प्रणाली हैं जिसमें संपति पर पुरुष के अधिकार तथा परिवार में उसके मुखिया पद में उसकी आर्थिक एवं राजनीतिक शक्ति निहित रहती हैं।[1]

दक्षिण के कुछ हिस्सो में आर्थिक विकास के 'सुनहरे युग' सतर और अस्सी के दशक में परिधि के नगरों में 'फोर्डवादी लैंगिक व्यवस्था सामने आयी जिसके तहत परिवार में पुरुष कमानेवाला और महिला गृहिणी होती हैं यह व्यवस्था विघटित हो रही हैं, क्योंकि परिवार के भरण पोषण के लिए सिर्फ पुरुषों का परिश्रमिक एवं वेतन आधार नहीं रह गया हैं। इसके साथ ही, साक्षरता, शिक्षा के प्रचार एवं श्रम क्षेत्र से महिलाओं के जुडने के कारण एक सगंठित राजनीतिक शक्ति के रुप में नारीवाद सामने आने लगा। भूमंडलीय दक्षिण की महिलाएँ अपने आपने देश में चुनौतियाँ देने लगी हैं, एक ऐसे भूमंडलीय नारीवादी आदोंलन में भागीदारी कर रही हैं जो संयुक्त राष्ट्रसंघ और यूरोपियसंघ जैसे अतर्राष्ट्रीय सगंठनो की नीतियों को प्रभावित करने में सक्षम हैं।[2]

इसके बावजूद पुरुषों की तुलना में महिलाएँ और बच्चे भूमंडलीय पूंजीवादी पुनर्रचना के अधिक शिकार हुए हैं। आर्थिक असुरक्षा और विपन्नता, विषैले पदार्थ का सामना, पानी का संकट, माता एवं शिशू की उच्च मृत्यू दर, बलात, विस्थापन वैतनिक तथा अवैतनिक कार्यो के बढते घंटे दुनिया भर में महिलाओं पर बढ रहे बोझ के कुछ संकेत हैं।[3] कामगार तथा शहरी और ग्रामीण गरीब महिलाओं के हक के लिए कार्ये करनेवाले महिला संगठन अपने कुटील विरोधी शक्तियों राष्ट्रीय राज्य, धार्मिक कट्टरपंथी आदोंलन और नव उदारवादी एजेंडे का प्रबंधन करने वाले भूमंडलीय केन्द्र द्वारा निर्धारित शक्ति संबंधो के एक विरोधाभास सपूर्ण क्षेत्र में पाते हैं। तीसरी दुनिया की सरकारे पुरुष प्रधान, ज्यादातर अक्षम पिछलग्गुवाद से ग्रसित तथा कभी कभी भ्रष्ट होती हैं। (उदाहरण भारत) और इन प्रवृत्तीयों को विश्व बैक तथा अतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा थोपे गये संरचनात्मक समाविष्ट कार्यक्रमो के दबाव ने प्रोत्साहित किया हैं। उनकी मुक्त बाजार नीतियो के लाभ के वादे पूरे नहीं हो पाने के कारण नारीवाद को निशाना बनाने वाले और सरकारी शक्ति को चूनौति देनेवाले धार्मिक कट्टरपंथी राजनीतिक आंदोलन तेज होते गये हैं (उदा. पाकिस्तान, अफगाणिस्तान भारत) इन आदोंलनो के जवाब में राष्ट्रीय सरकारे मुख्य रुप से महिलाओं के हितो की किमत पर राजनीतिक दमन और समझौते कर रुख अपनाती हैं। स्थानीय नागरिकता के धार्मिक अदालतो और नेताओं के हवाले कर देना इस बात का उदाहरण हैं। ऐसी नीतियाँ अपने सामाजिक नियंत्रण के कार्यो से परपरावांदी पितृसत्ता को बढावा देते आ रही हैं।जबकि स्थानीय अर्थव्यवस्थाओं का पूंजीवादी रुपांतरण महिलाओं को पितृसत्ताक व्यवस्था से जो भी सरक्षंण और सुरक्षा मिलती हैं उससे भी वंचित करता हैं। उदाहरण के तौर पर 'हरियाणा एवं बिहार राज्य की महिलाएँ'। कमजोर हो चूँकि एवं पुरुष प्रभुत्ववादी राष्ट्रीय राज्य एवं कटटरपंथी आदोंलनो के विपरित नवउदारीकरण व्यवस्था के प्रमुख संगठन, खासकर विश्व बैंक और सयुक्त राज्य अमेंरिका अन्तर्राष्ट्रीय विकास एजेंसी (USAD) जैसी आदि देशों की सरकारी एजेसिंया आधुनिकीकरण और लोकतंत्रीकरण का समर्थन करने का दावा करती हैं।[4] महिलाओं के आर्थिक विकास के प्रयासों, समाज सेवाओं और स्वास्थ सेवाओं के लिए संसाधनों का प्रस्ताव देकर नवविश्व आर्थिक व्यवस्था के प्रबंधक स्वंय को उदार नारीवाद के सहयोगी के रुप में प्रस्तुत करते हैं।

पूर्ण राजनीतिक नागरिकता, शिक्षा तथा व्यवसायिक अवसरों की समान उपलब्धता और महिलाओ के शरीर, यौनेच्छा तथा प्रजनन क्षमता पर पुरषों के सांस्कृतिक तथा वैधानिक अधिकार की समाप्ति मुख्य नारीवाद के राजनीतिक लक्ष्यों के सांस्थानिकीकरण से जिन शक्तियो को सर्वाधिक नुकसान होगा वे पितृसत्ताकत्मक राजनीतिक तथा आर्थिक शक्ति के पुराने स्वरुप को गवाने के डर से आशंकित समूहों का प्रतिनिधित्व करने वाले संगठन हैं। उदाहरण के तौर पर इस्लामी सरकारो, वैटिकर,

कैथौलिक संगठन, प्रोटेस्टेट इवामजेलिक रुढीवादी मुस्लिम, आर.एस.एस.संगठन और अन्तर्राष्ट्रीय जीवन अधिकार कमेंटी का उल्लेख किया जा सकता हैं।[5] □मंडलीय पूँजीवाद की जरुरतों के आधार पर उतरोतर प्रतियोगात्मक एंव वैयक्तिक आर्थिक तथा राजनीतिक विश्व में उत्तर की तरह दक्षिण में महिलाओं को पालन पोषण की जिम्मेंदारियाँ पुरुषों की तुलना में महिलाओं को हानि पहुँचाती हैं। महत्त्वपूर्ण तथा आवश्यक पालन पोषण के श्रम को लेकर महिलाओं और पुरुषों के संबंध में लगातार अंतर बना हुआ हैं और कल्याणकारी राज्य की समाप्ति के कारण जिसका निरंतर निजीकरण हो रहा हैं, यह अतंर पुरुष प्र□त्व को एक नये स्वरुप में संरक्षित कर रहा हैं।[6] ऐसी परिस्थिति में कामकाजी वर्ग और ग्रामिण तथा शहरी गरीब महिलाओं की अनिवार्यता एवं हितों को दर्शाने के लिए जो नारीवादी आंदोलन शुरु कराना चाहते हैं उन्हें गं□र तथा जटिल राजनीतिक द्वंद्वो का सामना करना पडता हैं। इसकी तीन वजह हो सकती हैं,

1. अतंर्राष्ट्रीय एवं राष्ट्रीय राजनीति के द्वारा नारीवादी संगठनो में पुर्नस्थापित या समाप्त होनेवाले वर्ग एवं नस्ल के प्रभुत्त्व के संबंध।
2. दबाव का सामना कर रहे महिलाओ के गैर सरकारी सगंठन तथा प्रतिरोध की सं□वनाएं एवं विकल्प।
3. □मंडलीय नारीवादी एवं □मंडलीय न्याय आदोंलनों के बीच तनाव एवं गठबंधन के बिंदूए।

पितृसत्तात्मक राष्ट्रवाद एवं नवउपनिवेशवाद के अंतराल में नारीवादी राजनीति

महिलाओं के उदार राजनीतिक अधिकारों का प्रचार करने और पहले अदृश्य रहनेवाले लैंगिक आक्रमण और घरेलू हिंसा जैसे मामलों को उठाने में संगठित नारीवाद स्थानीय तथा □मंडलीय स्तर पर सबसे अधिक गतिमान रहा हैं, और इस तरह महिलाएँ राष्ट्रीय राजनीति के साथ साथ औपचारिक राजनीति से □ जुडती गयी हैं।[7] नारीवादियों को बहुत समस्याओं का सामना करना पडता हैं, चूँकी यह उन्हें परंपरागत पुरुष नियंत्रण से निकलने के अवसर □ प्रदान करता हैं। अमेंरिका में अश्वेत महिलाओं ने श्वेत नारीवादियों को यह समझने के लिए चुनौती दी हैं कि उनके विश्लेषण की श्रेणी श्वेतो, मध्य वर्ग के अनुभव व निर्धारित समानता तथा अवसरों की विश्वसनियता को ही मानती हैं, जिससे कामकाजी और अश्वेत महिलाओं के हितों की अनदेखी होती हैं। लग□ा इसी तरह दक्षिण के नव उपनिवेशो की महिलाओं में उत्तर की महिलाओं की प्रभुत्वशाली आवाज को □ चुनौति दी हैं।

1975 मेंक्सिको शहर में संयुक्त राष्ट्रसंघ संगठन की तरफ से अतर्राष्ट्रीय महिला दिवस 8 मार्च के अवसर पर विश्व सम्मेंलन आयोजित किया गया था। तबसे अतर्राष्ट्रीय नारीवाद में बहस होती रही हैं कि महिलाओं के हितों की व्याख्या किस तरह की जाए। इस संद□ में महत्वपूर्ण घटना घटित हुई कि, 'मानवाधिकार' के मंचों को एक सागंठनिक एजेंडे के रुप में स्वीकार किया गया जिसके आधार पर महिलाएँ अतर्राष्ट्रीय स्तर पर सहयोग कर सकती हैं। 1993 में मानवाधिकार संबंधी संयुक्त राष्ट्रसंघ विश्व सम्मेंलन में मानवाधिकार ही महिलाओं का अधिकार हैं तथा महिलाओं का अधिकार ही मानवाधिकार हैं। का तक्र देनेवाले महिला सगंठनों ने सम्मेंलन में कहा कि लैगिक आधारित हिंसा को मानवाधिकरों का उल्लघन माना जाए, जिसके लिए तत्काल कार्यवाही की अनिवार्यता होगी। राजनीति विमर्श में आदी नारीवादी शामिल हुए हैं, और इस बात से इनकार किया हैं कि गैर पश्चिमी संस्कृतियों में जिस आधुनिकीकरण को आकार दिया हैं वह महिलाओं को अधिक गरिमा, शक्ति और सम्मान प्रदान कर सकता हैं। इस तरह उन्होने तीसरी दुनिया में उत्तरी साम्राज्यवादी परियोजना के एक अंग के रुप में नारीवाद को परि□ाषित करने का अवसर नारीवाद विरोधी शक्तियों को प्रदान किया हैं।

'महिलाओं के अधिकारो' का साम्राज्यवादी उद्देश्यों के लिए प्रयोग करने का एकसटीक उदाहरण जार्ज बुश (अमेंरिकन राष्ट्रपति) का यह दावा हैं कि अफगानिस्तान पर अमेंरिकी आक्रमण अफगान महिलाओं के मानवाधिकारों को बढावा देने के लिए किया गया। इस दावे का आधार उत्तरी महिला अधिकार संगठनो के एक गठबंधन द्वारा 1997 में अतर्राष्ट्रीय महिला अधिकारों के अभियान की शुरूवात थी।[8] इस अ□ान ने अतंर्राष्ट्रीय समुदाय से तालिबान के लिए निवेश एवं मान्यता से इनकार करने का आव्हान किया, जबकि इसने तालिबान शासन की स्थापना में उत्तर सहापराधिता तथा नवउदारवादी भूराजनीतिक एजेंडे के तहत

तालीबान शासन के प्रति वाशिग्टन की सहिष्णुता की उपेक्षा की।साथी साथ यह □ अनदेखा किया कि तालीबान के शान की अमेंरिकी स्वीकृति इसने व्यापक नवउदार □ाजनीतिक एजेंडे में अंतर्निहित था। तीसरी दुनिया के नारीवादी के नेतृत्व में कुछ संगठनो ने पितृसत्तात्मक राष्ट्रवाद और नारीवाद के औपनिवेशीकरण के बीच एक सैद्धातिक ढांचा निर्धारित करने का प्रयास किया। उदा. मुस्लिम कानून के अधीन रहने वाली महिलाओं का सगंठन इस्लामी नियमों के ढांचे के तहत रहते हुए □ धार्मिक राजनीतिक कट्टरपंथ को चुनौति दे रहा हैं और जिस तरह पुरुष ऐतिहासिक रुप से करते रहे हैं उसी प्रकार इस्लाम के व्यवहारों को पुर्नपरि□ाषित कर रहा हैं। इस सदं□ में राधिका कुमार स्वामी का कथन महत्वपूर्ण हैं कि, साम्राज्यवादीकरण नीति का बंधक बने बिना स्थानीय स्तर पर मानवाधिकारों की सुरक्षा कैसे की जा सकती हैं। इसके वे दो सुझाव देती हैं।

ऐसा कोई □ व्यवहार जो महिलाओं को पीडा और यंत्रणा देता हो, उसे अपराध मानना चाहिए। उस समाज की महिलाएँ जो अलग अलग तरीके से नस्लवाद, एवं सांप्रदायिकता के खिलाफ संघर्ष करने के साथ पितृसत्ता के खिलाफ और महिलो के अधिकारों के समर्थन में जुझती रही हैं, बहस, संवाद एवं गठबंधन निर्माण के जरिये दूसरे व्यवहारो का मूल्यांकन कर सकती हैं। हालाकि ऐसे समूह में □ गं□ीर मत□द नजर आते हैं।[9] हाल ही में पाया गया की, □ांडलीय दक्षिण में कामकाजी वर्ग और गरीब वर्ग की महिलाएँ वर्ग के आधार पर पुरुषों की हिंसा के बारे में अपनी समक्ष का निर्धारण करती हैं। वे इसे एक विशेष सामिाजक संद□ के मुद्दे के तौर पर पहचानती हैं, जैसे गरीब जिलों में सरकारद्वारा शराब की ब्रिक्रि को बढावा देना अथवा बढती बेरोजगारी और पुरुषों के परंपरागत रोजगार का नष्ट होना। इसके विपरित मध्यवर्ग अतंर्राष्ट्रीय मानवाधिकारों की राजनीति को स्थानीय वि□ागों में प्रतिरुपित करने की वकालत करता हैं और महिलाओं के खिलाफ हिंसा के व्यापक कारणों से अलग कानून तथा पुलिस के व्यवहारो को बदलने की बात करता हैं।[10] अपने सांगठनिक विकास के लिए □ांडलीय नारीवादी नमिनी स्तर की सदस्यता के जरिये मददपर निर्भर नहीं हैं, बल्कि उत्तर में संयुक्त राष्ट्रसगंठन जैसे संगठन और सामाजिक लोकतांत्रिक सरकारों और मुख्य पूंजीवादी देशों के नीति प्रतिष्ठानोंपर नि□र हैं। नब्बे के दशक की शुरुआत में राष्ट्र संगठन ने नारीवादी, दबाव के कारण स्थानीय महिलाओं के समूहो के राष्ट्रीय सम्मेंलनो में विकास मुद्दों को संबोधित करने के लिए विविध मदद देना शुरु किया था।[11] मेरा मानना हैं कि, बाहरी वित्तीय सहयोग के बहुत से परिणाम होते हैं। तीसरी दुनिया में महिलाओं के गैर सरकारी संगठन वित्त के बाहरी स्त्रोतों पर निर्भर करते हैं। जमीन से जुडे समूह जब सामाजिक आंदोलन के सगंठन बन जाते हैं, तब उन में अपने लोगों को संगठित करने की जगह उनकी वकालत करने की प्रमुखता मिलने लगती हैं तो व्यवसायीकरण एवं नौकरशाहीकरण की प्रक्रिया आवश्यक रुपसे शुरु हो जाती हैं। कुछ सगंठनो ने दूसरों की तुलना में अपने सामाजिक आधार से संबंध बनाए रखने और जिम्मेंवारी नि□ाने में बेहतर काम किया हैं।[12] किन्तु अपनी संरचनात्मक स्थिति के साथ–साथ राष्ट्रीय राज्यों एवं अतंर्राष्ट्रीय वित्तदाताओं के संबंध के कारण ये गैरसरकारी सगंठन ऐसे परामर्शक एवं लैंगिक विशेषज्ञ बन गये हैं। जो राज्य एवं उसके ग्राहकों के बीच दलाल की □ूमिका नि□ाते हैं।[13]

गैर सरकारी सगंठन, लोकप्रिय नारीवाद तथा वर्गहीन गठबंधन की समस्याएँ

कामकाजी वर्ग और शहरी तथा ग्रामीण व स्थानीय समुदायों की महिलाओं की राजनीतिक लामबंदी के लिए सामाजिक एवं सामूहिक अधिकारो के लिए संघर्ष महत्त्वपूर्ण रहा हैं। शहरी जीवन स्तर में गिरावट ग्रामीण जीविका के साधनों की तबाही तथा अतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष द्वारा थोपे गये संरचनात्मक समायोजन कार्यक्रमों के द्वारा राज्य के कार्य का लग□ा विस्फोट हुआ हैं। इस सक्रियतावाद के तीन लक्षण हो सकते हैं।

यह सक्रियतावाद जीवित रहने की आवश्यकताओं से संचलित हैं, यह परिवारों के मध्य आधारित आपसी सहयोग के नेटवक्र जो सामुदायिक मूल्यों से पोषित हैं, पर आधारित हैं, और जिसे महिलाओं के परंपरांगत लिंग आधारित कर्तव्यों के द्वारा मान्यता प्राप्त होती हैं। वैसे ही इसके विस्तार में अब पुरुषों से पृथक सार्वजनिक जीवन में महिलाओं की सह□ागिता □ शमिल हो चुकी हैं। यह राजनीति जो मातृसेवा सुश्रृषा पर आधारित हो, परंपरागत नर–नारी की □ूमिका को चुनौती नहीं देती। बल्कि महिलाओं के मातृत्व रुप की पहचान को नये से स्थापित करती हैं। किन्तु यह जमिनी स्तर के कार्यकर्ताओं द्वारा पुरुष शक्ति, को

चुनौती दे सकती हैं, बशर्ते यह उस सद□ में घटित हो जब नारीवादी विचार राज्य के साथ महिला के अधिकारों के बारे में पर ही लागू न हो, बल्कि उनके अपने समुदायों, परिवारों एवं आंदोलन के संगठनों के पुरुषों पर □ लागू होना चाहिए।[14] वास्तविकता कहती हैं कि, सत्तर और अस्सी के शुरआती दौर में तीसरी दुनिया और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर महिला कार्यकतोओं का संघर्ष कामकाजी वर्ग खालिहर महिलाओं के साथ महिलाओं की जरुरतों की राजनीति की तुलना में उदार (नागरिक एवं राजनीतिक) अधिकारों की राजनीति पर केंन्द्रीत था। उनका तक्र था की तीसरी दुनिया की महिलाओं के लिए व्यक्तिगत नागरिक अधिकारों की तुलना में सामूहिक एवं सामजिक अधिकार अधिक महत्वपूर्ण हैं। मुझे लगने लगा हैं की, कुछ हद तक यह मत□ह महिला कार्यकर्ताओं के परंपरागत कामकाजी वर्ग की राजनीति, आम राजनीतिक लामबंदी श्रम युनियनों, बेरोजगारों के सगठंनों, वाम राजनीतिक पार्टियों तथा खेतिहर सगठंनो में घुलमिल जाने से पैदा हुआ।मुक्त व्यापार क्षेत्र के नये सर्वहारा में कामकाजी वर्ण और लोकप्रिय नारीवाद के अपने संस्करणों का विकास किया। स्थानीय सामाजिक एवं राजनीतिक आदोंलनो की पुरषवादी राजनीति से बाहर आकार वे लेंगिक राजनीति के मुद्दो को संबोधित करने लगे और लामबंदी के लिए अलग नारीवादी तरीकों का विकास किया। चेतना का विकास, सर्वसम्मति से निर्णय और सामूहिक सशक्तीकरण के लिए वैयक्तिक सशक्तीकरण पर ध्यान देना।[15]

1995 में बीजिंग में कार्यवाही मंच ने तीसरी दुनिया की अर्थव्यवस्थाओं में महिलाओं की स्थिति सुधारने के लिए कई सुधारों एवं हस्तक्षेपों का प्रस्ताव रखा महिलाओं के गैर सरकारी संगठनों को छोटे ऋण के कार्यक्रम को लागू करने में सर्वाधिक सफलता हासिल हुई हैं। अमेंरिकी अन्तर्राष्ट्रीय विकास प्राधिकरण (युनाइटेड स्टेट्स एजेंसी ऑफ इंटरनेशनल डेवलपमेंट) और विश्व बैक द्वारा शुरु किये गये कार्यक्रमो में विकास कार्यो के लिए निर्धारित का मुख्य हिस्सा महिलाओं के लिए नियोजित किया जाता रहा हैं। लेकिन महिलाएँ अक्सर अपने ही बच्चो का, खासतौर पर बेटियों का शोषण अपने कार्ये के लिए करने लगती हैं। इस तरह महिलाओं के मध्य प्रतियोगात्मक संबंध विकसित होता हैं और महिलाओं या उनके परिवारों को गरीबी से उपर लाने में बहुत कम मद्द मिलती हैं।[16]

सैद्धांतिक रुप से छोटा ऋण नवउपनिवेशवादी नजरिये को पुनर्स्थापित करता हैं जो तीसरी दुनिया की महिलाओं को पहचान तथा वैयक्तिक शक्तियाँ प्रदान कर राज्य द्वारा नियंत्रित और संचालित विकास की जरुरत को खात्मा कर देना चाहता हैं। जमिनी स्तर की महिलाओं के मातृत्व के गुणों के महत्व और उनके जीवन यापन की क्षमता को देखते हुए गैर सरकारी सगंठन विकास के धन का 'सर्वश्रेष्ठ निवेश' महिलाओं के लिए करने का तक्र देते दिख रहे हैं। मुझे ऐसा लगता हैं कि, 'छोटा ऋण उद्योग' का उदय नारी सशक्तीकरण के लिए सार्थक सिद्ध होगा। जिससे महिलाएँ आर्थिक स्तर पर मजबूत एवं ताकतवर सिद्ध होगी।

प्रजनन अधिकार

पचास–साठ के दशक से विश्व बैंक, अमेंरिकी अन्तर्राष्ट्रीय विकास प्राधिकरण (USAID) एवं अन्य विकास एजेंसियो के दबाव के कारण विकासशील देशों ने जनसंख्या नियत्रंण कार्यक्रमों को क्रियान्वित करना शुरु किया, ये कार्यक्रम 'किसी □ सूरत में महिलाओं की जनन क्षमता को कम करने के लिए तैयार किये गये थे और उनके अनगिनत दुरुपयोग का दस्तावेजीकरण किया जा चुका हैं।[17] सत्तर के दशक से गैर सरकारी संगठनों औ संयुक्त राष्ट्रसंघ के जरीए काम कर रहे नारीवादियों के अन्तर्राष्ट्रीय नेटवक्र के जनन क्षमता से हटकर महिलाओं तथा बच्चों के स्वास्थ एवं कल्याण की तरफ ध्यान केंद्रीत करना चाहा। अन्तर्राष्ट्रीय नारीवादी प्रयासों को 1994 के कैरो के अंतर्राष्ट्रीय जनसंख्या तथा विकास पर संयुक्त राष्ट्रसंगठन सम्मेंलन में सार्थक विजय प्राप्त हुई, जिसमें कार्यवाही, मंच का प्रस्ताव पारित कर महिलाओं के जनन अधिकारों पर प्र□व डाला गया। और सरकारी नीतियों की □र्सना की गयी।

भूमंडलीय न्याय आंदोलन में नारीवाद

भूमंडलीय व्यवस्था में नारीवाद अपने वजूद स्थापित करने के लिए न्याय आदोंलन में हिंस्सा वर्तमान काल की मांग हैं। २० वीं सदी के अंत में दावोस में आयोजित विद्या आर्थिक मंच की बैठक में भूमंडलीय पूंर्जावाद के प्रबंधक नवउदारवादी व्यवस्था में वैधानिकता के गहरे संकट को स्वीकार करने के लिए विवश हुई।[18] विश्व के बीचोबीच पोर्तो एलग्रे में विश्व सामाजिक मंच के सम्मेंलन में कार्यकर्ता इकटठे हुए और भूमंडलीय नयाय आंदोलन के लिए एक राजनीतिक एजेंडा तैयार करने की कोशिश की, जिसने दुनिया के अभिजात वर्ग को रक्षात्मक मुद्रा में लाकर खडा कर दिया। विश्व सामाजिक मंच में जमिनी स्तर के आदोंलनो की नेता और प्रतिनिधी के रुप में महिलाओं की भागीदारी भविष्य की संभावनाओं से भरपूर हैं। इसलिए भूमंडलीय न्याय आदोलनों में नारीवादी संगठनों का जुडना महत्त्वपूर्ण हैं।

तीस साल पहले, यहां तक कि कांतिधर्मी आदोलनों में भी महिलाओं का पुरुषों पर नेतृत्व करना व लैगिक उत्पीडन को तथा महिला संबंधी मामलों को अन्य मामलों से अधिक महत्व देना सोचा ही नहीं जा सकता था। वे सगठंन जो अपने शास्त्र संघर्ष एव कांतिकारी सोच तथा साहस के लिए सर्वाधिक सम्मान पाते हैं, वे गहराई से अपने राजनीतिक कार्यक्रम व नेतृत्व ढांचे में नारीवाद से प्रभावित होते हैं। उदाहरण के आधार पर 1993 में महिलाओं की स्थानीय समितियाँ बनाने तथा सैकडो सामुदायिक बैठके आयोजित करने के बाद मेंक्सिको में गुप्त जपातिस्ता स्थानीय क्रांतिकारी समिती ने महिलाओं के लिए कांतिकारी कानूनों को पारित किया। महिला के अधिकारों के इस कार्यक्रम में उनके होनेवाले बच्चो की संख्या निर्धारित करने तथा उनकी रक्षा का अधिकार, काम का अधिकार, उचित वेतन लेने तथा उनके साथी के चुनाव का अधिकार शामिल हैं।[19]

अभी भी अन्तर्राष्ट्रीय नारीवाद और भूमंडलीय न्याय आदोंलन के दूसरे हिस्सों के बीच तनाव के क्षेत्र कायम हैं। तनाव के विभिन्न कारण हो सकते हैं। शक्तियों के जटिल समूह को प्रदर्शित करने वाली इन 'दोषपूर्ण धाराओं का यहाँ पुरी तरह स्पष्टीकरण नहीं किया जा सकता क्योंकी शोध आलेख की अपनी समस्या होती हैं, इसलिए यहाँ पर विवरण सम्भव नहीं। फिर मैं में समस्याओं के उदाहरण देना चाहुँगा जिन्हें भूमंडलीय न्याय आदोंलन को सुलझाना होगा

1. महिलाओं के गैर सरकारी संगठनों और श्रमिक युनियनों के बीच मतभेद.
2. गर्भपात तथा यौन अभिविन्यास पर रणनीतिक खामोशी.
3. महिला, महिलाओं में वर्चस्ववादीता की प्रतियोगिता.
4. कुछ महिलाओं के ज्यादा पाने की लालसा.
5. विश्वस्तरीय एकजूट न होना।

निष्कर्ष

1. अन्तर्राष्ट्रीय नारीवादी आदोंलन बिखरा सा दिख रहा हैं।
2. भूमंडलीय न्याय आंदोलन के भीतर लैंगिक संबंधों और नारीवादी राजनीति के संघर्ष एवं तनाव जहाँ आशा जगाते हैं, वही आगाह भी करते हैं।
3. संघर्ष हैं क्योकिं महिला कार्यकर्ता एवं उनके संगठन राजनीति के मंच पर गंभीर भूमिका निभा रहे हैं और पुरुष प्रभुत्व का विरोध बहिरागत की तरह नहीं, बल्कि भूमंडलीय न्याय आदोंलन के नेटवक्र के भीतर रहकर कर रहे हैं।
4. श्रमिक वर्ग और लोकप्रिय नारीवादी कार्यकर्ताओ और उनके संगठनो के राजनीतिक एवं रणनीतिक हस्तक्षेपों के लिए स्थान बनाने वाले आदोंलन आकर्षण का एक शक्तिशाली धृव बनाएगें जो उनके लिए विकल्प होगा। जो अभी मानते हैं कि नवदारवादी व्यवस्था से समझोता करने के सिवा उनके पास कोई चारा नहीं हैं।
5. विश्वस्तर पर पूँजीवादी व्यवस्था के साथ टकराव दिख रहा हैं।
6. अमेंरिकी धारणा बदलना अनिवार्य होगा।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. *प्रो.वर्मा.एस.एल.–उच्चतर आधुनिक राजनीतिक सिद्धांत नेशनल पब्लिशिंग हाऊस दिल्ली–प्रथम संस्करण–2002, पेज– 619.*
2. *संपादक, सेन जय, आनन्द अनिता–नयी सुबह की ओर–प्रकाशन संस्थान नयी दिल्ली–2006, पेज–६१–६२–६३.*
3. *वांडारेज–1998.*
4. *फेल्डमेंन. ग्रीष्म–2001–पृ. 1108.*
5. *दाधीच प्रमिला–आधुनिक समाज में कार्यशील महिलाएँ–माक्र पब्लिसर्स, जयपूर–प्रथम संस्करण–2009,*
6. *वोल्सटनक्राप्ट. मेंरी–स्त्री अधिकारों का औचित्य साधन राजकमल–विश्व क्लासिक–2006.*
7. *मिल जॉन स्टुअर्ट–स्त्रियों की पराधीनता राजकमल विश्व क्लासिक–2003.*
8. *सत्य सु□ष चन्द्र–□रतीय नारी–कितनी जीति कितनी हारी–अनिल प्रकाशन दिल्ली–संस्करण–2006.*
9. *शर्मा–प्रेम नारायण झा, संजीव कुमार, वाणी विनायक–महिला सशक्तीकरण एवं समग्र विकास □रत बूक सेन्टंर लखनऊ–संस्करण–2008*
10. *डॉ. जैन पुष्पराज, डॉ. फडिया. बी. एल.–□रतीय शासन एवं राजनीति साहित्य □वन–उन्नीसवा संस्करण 2012.*
11. *गाडे सोपान–महाराष्ट्रातील महिलाराज आविष्कार प्रकाशन–2008.*
12. *स्वामी कुमार–2002.*
13. *पराकाष्ठा नारीवाद, प्रजाति, अन्तर्राष्ट्रीयतावाद–शी. 2002, पृ.१६.*
14. *1995 में बिजिंग सम्मेंलन से दो वर्ष पहले लाटिन अमेंरिकी एवं कैरे बियाई क्षेत्रीय गैर सरकारी सगंठन–2000, पृ. १६.*
15. *ओटैगा, अमूचा स्टेगी और रिवास 1998,पृ. १४५–१४७.*
16. *बेलो–२००१, बेयस और केली. २००१, पृ. १६०–१६१.*
17. *पेचेस्की एवं जुड–पृ. ३१०.*
18. *टॉवन्सेड व अन्य 1999 कोरकोरान–नेर्टस २०००, पृ. ३६–३७.*
19. *बेलो–2001, वेयस और केली–2001 पृ. 160–16.*
20. *डिंनिज व अन्य, 1998 पृ. 61–62.*